Rev. Dr . Timothy C. Geoffrion,
Ph.D., D.D. Founder
Faith ,Hope, and
Love Global Ministries

Essay by: Rev.Dr Timothy .C.Geoffrion
Translated to Hindi by: Pastor Arvind Deep

Topic spiritual Truth 1 Remember your limited ability to understand the will and ways of God , परमेश्वर की इच्छा और तरीकों को समझने की अपनी सीमित क्षमता को याद रखें

आप सभी को जय मसीह की, इस महामारी की परिस्थिति ने साबित कर दिया कि किसी ने भी बता नही पाया किस कारण से यह महामारी विश्व भर मे फैलने लगा विश्व के बडे बडे चगांइ सभा के प्रचारक, नबी भी परमेश्वर से कोई आवाज या इशारा नही पाया की क्या वजह है इस महामारी के पीछे परमेश्वर की इच्छा। यह इस बात को बता रहा है, परमेश्वर की इच्छा और तरीकों को समझने की अपनी सीमित क्षमता को याद रखे, और आज फिर एक बार नये संदेश के साथ हम परमेश्वर के वचन से हम सब सिखेगें

आत्मिक सत्य १: परमेश्वर की इच्छा और तरीकों को समझने की अपनी सीमित क्षमता को याद रखें ...

परमेश्वर कहाँ है ?! वह हमारी मदद करने के लिए और अधिक क्यों नहीं कर रहा है? क्या परमेश्वर कुछ भी कर रहा है? यदि आप इस तरह के प्रश्न पूछ रहे हैं, तो यह एक संकेत है कि आप इस बात की गहराई से परवाह करते हैं कि अभी हमारी दुनिया में क्या हो रहा है। आप परमेश्वर पर विश्वास करते हैं और मानते हैं कि वह बहुत मदद कर सकता है। फिर भी, आप भ्रमित या निराश हैं, या केवल डरे हुए हैं। आप परमेश्वर की उपस्थिति या मदद के बारे में उतना नहीं सोच रहे हैं जितना आपको इसकी आवश्यकता या अपेक्षा है, और आप अधिक चाहते हैं।

निम्नलिखित लघु निबंध विषय पर सात-भाग की श्रृंखला में पहला है, "हम अब परमेश्वर से क्या उम्मीद कर सकते हैं?" यह उन लोगों के लिए भाई-बहन, आध्यात्मिक सच्चाइयों का संग्रह है जो परमेश्वर को जानते हैं, प्यार करते हैं और उसकी सेवा करते हैं, जो यह जानना चाहते हैं कि वे कैसे परेशान ,संकट क्लेश, सताव, तगीं के समय में परमेश्वर पर भरोसा कर सकते हैं।

आध्यात्मिक सत्य 1: परमेश्वर की इच्छा और तरीकों को समझने की अपनी सीमित क्षमता को याद रखें। परमेश्वर को जो भी अर्पित करो। (यशायाह ५५:१-९ लूका २४:१३-२२)

यदि हम परमेश्वर के लिए हमारी अपेक्षाओं की सावधानीपूर्वक जाँच करते हैं, तो हम में से अधिकांश को पता चलेगा कि हम परमेश्वर से अपेक्षा करते हैं कि वह हमारे विचारों और इच्छाओं के अनुकूल हो। हमें बाइबल में पढ़ी गई या उपदेशक कहते हुए सुनाई गई चीज़ों के द्वारा उन्हें संकेत दिया जा सकता है, लेकिन करीब से निरीक्षण करने पर, हम में से अधिकांश परमेश्वर की इच्छा और उम्मीद करते हैं और आशा करते हैं कि हम उसे करना चाहते हैं। जब हम आशा या अपेक्षा के अनुरूप होते हैं, तब परमेश्वर हमारे लिए क्या नहीं करता है? हम आसानी से आहत, भ्रमित, व्यथित या यहाँ तक कि क्रोधित हो जाते हैं। तो, सवाल यह है कि क्या परमेश्वर पर दोष थोपना है या यह हमारी दोषपूर्ण अपेक्षाएं हैं?

बाइबल के लेखक बार-बार हमें कहते हैं कि जब परमेश्वर हमारी उम्मीदों पर खरा नहीं उतरता है तो हमें बहुत आश्चर्य नहीं होना चाहिए। वजह साफ है। आप और मैं परमेश्वर के मन को नहीं जान सकते हैं या समझ नहीं सकते हैं, और वह अक्सर ऐसे तरीकों से काम करता हैं जो अनदेखी हैं ,और केवल पूर्वव्यापी में ही समझे जा सकते हैं।

हमें क्या समझने की जरूरत है

यशायाह नबी के माध्यम से, यहोवा (परमेश्वर) इसराइल को समझाता है कि परमेश्वर के तरीके हमारे तरीके नहीं हैं। वह लिखता है:

क्योंकि मेरे विचार तुम्हारे विचार नहीं हैं,

न तो तुम्हारे। रास्ते मेरे रास्ते हैं, प्रभु कहते हैं।

क्योंकि आकाश पृथ्वी से जितना ऊंचा है,

इसलिए मेरे रास्ते तुम्हारे तरीकों से ऊंचे हैं,
और मेरे विचार तुम्हारे विचारों से।
(यशायाह ५५: ८-९NIV)

यशायाह कह रहा है कि हमें उन कठिन या आश्चर्यजनक बातों को समझने की कोशिश करनी चाहिए जो परमेश्वर करता है (या नहीं करता)। इसके बजाय, हमें इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि हम क्या समझ सकते हैं और इससे क्या लाभ हो सकता है। इस विशेष संदर्भ में, यशायाह परमेश्वर से उसके मूल आध्यात्मिक जरूरतों को पूरा करने की इच्छा के बारे में बात कर रहा है। हालाँकि, इज़राइल परमेश्वर के तर्क को समझ नहीं पा रहा था कि वह दुनिया में कैसे काम कर रहा है , वे परमेश्वर के प्रेम, दया और अनुग्रह का लाभ उठा सकते हैं, यदि वे परमेश्वर के इच्छा के अनुसार करने की पहल करे तब । वे अपने पापों पर पश्चाताप कर सकते थे और परमेश्वर को उनकी गहरी आध्यात्मिक आवश्यकताओं और लालसाओं को पूरा कर सकते थे। वह लिखता है:

१ अहो सब प्यासे लोगो, पानी के पास आओ; और जिनके पास रूपया न हो, तुम भी आकर मोल लो और खाओ! दाखमधु और दूध बिन रूपए और बिना दाम ही आकर ले लो।
२ जो भोजनवस्तु नहीं है, उसके लिये तुम क्यों रूपया लगाते हो, और, जिस से पेट नहीं भरता उसके लिये क्यों परिश्रम करते हो? मेरी ओर मन लगाकर सुनो, तब उत्तम वस्तुएं खाने पाओगे और चिकनी चिकनी वस्तुएं खाकर सन्तुष्ट हो जाओगे।
३ कान लगाओ, और मेरे पास आओ; सुनो, तब तुम जीवित रहोगे; और मैं तुम्हारे साथ सदा की वाचा बान्धूंगा
तुम आनंदित होगे
(यशायाह ५५: १-३, एनआईवी)

संकट के समय में, हम अपने भय के साथ इतने पहले से ही व्यस्त हो सकते हैं और मदद के लिए तरसते रहते हैं कि जो उपलब्ध है उससे हम चूक जाते हैं। जब तक हम उस चीज़ को पाने की कोशिश में लगे रहते हैं जो हमारे पास नहीं हो सकती है (जैसा कि यह अचूक सवालों का जवाब है, सुरक्षा की गारंटी, स्वास्थ्य का आश्वासन, गलत स्रोतों से आराम, या कुछ और जो हमारे लिए बहुत महत्वपूर्ण है, लेकिन हमारी पहुंच से बाहर है), हम अशांत और असंतुष्ट रहेंगे। यदि, इसके बजाय, हम एक तरफ छोड़ देते हैं, जिसे हम समझ नहीं सकते हैं और जो हमारी समझ के भीतर है, उस तक पहुंचने पर ध्यान केंद्रित करते हैं, तो हम अधिक आंतरिक शांति का अनुभव करेंगे। हम अपनी परेशानियों का सामना करने के लिए बेहतर तरीके से तैयार हो जाएंगे और यह देखना बेहतर शुरू कर देंगा कि परमेश्वर हमारे लिए कितना अच्छा है।

यीशु को अपनी आँखें खोलने दे,

नए नियम में, हम यीशु के दो शिष्यों को ईमाऊस के मार्ग पर यीशु से मिलने की घटना पाते हैं। इस घटना को वे जानते थे, यीशु को सूली पर चढ़ा दिया गया था, उसकी मृत्यु हो गई थी, और उन्हें एक कब्र में दफनाया गया था। उनके जीवन और भविष्य के लिए उनकी बहुत सारी उम्मीदें अचानक कुछ दिनों में दुर्घटनाग्रस्त हो गईं और समाप्त हो गईं। (ध्वनि परिचित?) हालांकि, जो वे नहीं जानते थे और देख नहीं सकते थे वह यह है कि परमेश्वर अभी भी उनके संकट के बीच में थे। यीशु वास्तव में पहले ही पुनर्जीवित हो चुके थे। परमेश्वर ने यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के माध्यम से पूरी दुनिया में उद्धार और आशा लाने के लिए एक अविश्वसनीय योजना का उद्घाटन किया था। वास्तव में, वे अपने दुःख में इतने डूब गए थे कि वे यीशु को पहचान भी नहीं सकते थे जब वह उन्हें सड़क पर दिखाई देता है। लुका कहते हैं, जब यीशु ने उनसे पूछा कि वे क्या चर्चा कर रहे थे, "वे अभी भी उदास दिख रहे थे" (लुका २४:१७ एनआरएसवी)।

संकट और अनिश्चितता के इस समय में, जीवन की सड़क पर "अटक" जाने से सावधान रहें, अपने रास्ते में उदास चेहरों के साथ रुक न जाए , वे अभी सभ को खो दिया है। जब जीवन की घटनाएं बस आपके लिए मायने नहीं रखती हैं और आप कल्पना नहीं कर सकते कि परमेश्वर क्या कर रहा है, का एक हिस्सा हो सकता है, परमेश्वर के तरीकों को समझने के लिए अपनी क्षमता की सीमाओं को याद रखें। परमेश्वर वह सब कर सकता है जिसकी आप कल्पना भी नहीं कर सकते हैं,।

मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि परमेश्वर COVID -19 का कारण बना या कि सब कुछ ठीक है, सभी के लिए ठीक है। यह। लेकिन यह कहानी मुझे याद दिलाती है कि यशायाह ने हमें क्या बताया। परमेश्वर के रास्ते हमारे रास्ते नहीं हैं। वह अक्सर हमें आश्चर्यचकित करते हैं। बाइबल में बार-बार, हम पढ़ते हैं कि परमेश्वर बुराई, हानि, विपदा, और दुख से बाहर लाने के लिए उचित रूप से निराशाजनक स्थितियों में भी काम कर रहा है। एईमाऊस के लिए सड़क पर उदास शिष्यों की कहानी जो उनके सामने खड़े हुए यीशु मसीह को वे नहीं देख पाए , हमें याद दिलाती है कि हम सभी को अपनी आँखें खोलने के लिए यीशु की आवश्यकता है। अपने हिस्से में, हमें संकट के बीच, उन स्थानों और तरीकों से मसीह की तलाश करने की आवश्यकता है जो हम उसके होने की उम्मीद नहीं करते ।

आध्यात्मिक प्रयोग

हर तरह से, अपने मन में हर ज़रूरत और चिंता के लिए प्रार्थना करें, क्योंकि हम कभी नहीं जानते कि परमेश्वर कब कुछ उपचार, प्रसव, प्रावधान, या कुछ अन्य तरह से मदद के बारे में लाने के लिए हमारी ईमानदारी से प्रार्थना का उपयोग कर सकते हैं। लेकिन, अगर आपकी प्रार्थनाओं का आपके द्वारा अपेक्षित तरीकों से जवाब नहीं दिया जा रहा है, तो निराश न हों। उसके पास पहुंचना बंद न करें। यीशु मसीह से अपनी आँखें खोलने के लिए कहें जो आप अपने दम पर नहीं देख सकते हैं और पवित्र आत्मा को अपने विश्वास को मजबूत करने और वर्तमान संकट के बीच में अच्छे के लिए उपयोग करने के लिए कहें। और, चाहे कुछ भी हो, आप जो कुछ भी जानते हैं, वह यह सुनिश्चित करना न भूलें कि आपके लिए क्या पेशकश की जा रही है। अपने पापों का पश्चाताप, जो आपके जीवन के लिए परमेश्वर की इच्छा से आपको संतुष्ट या विचलित नहीं कर सकता, उसके साथ अपने जुड़ाव को होने दें। परमेश्वर की कृपा, दया और आध्यात्मिक भोजन की तलाश करें जो पैसे नहीं खरीद सकते। “कान खोलो और मेरे पास आओ; सुनो, कि तुम जीवित रह सकते हो, ”तुम्हारा प्रेमी, दयालु परमेश्वर (यशायाह५५: ३) कहता है।

बिशप अरविंद दीप